मदद करते हुए सीखना

सुरेश कुमार साहू, राकेश टेटा
और गुलशन यादव

अपनी विविध भौगोलिक और सामाजिक विशेषताओं के साथ धमतरी जिला छत्तीसगढ़ के मध्य भाग में स्थित है। इस जिले का एक महत्त्वपूर्ण और उपजाऊ भाग महानदी घाटी में पड़ता है। इस क्षेत्र के लोगों की जीविकाओं में सिंचित कृषि व्यवस्था के तहत होने वाली धान की खेती का अहम योगदान है। इस जिले के दक्षिण में एक विशिष्ट इलाका है जिसका भूभाग उतार–चढ़ाव वाला है और जहाँ घने जंगल पाए जाते हैं। इस क्षेत्र के लोग लघु वन–उपज का संग्रहण करते हैं, जो इन लोगों की जीविकाओं का एक और सहारा है, क्योंकि इस इलाके में सिंचाई का अभाव होने से लोग सिर्फ अपने जीवन के निर्वाह लायक खेती ही कर पाते हैं। इस जिले के भीतर ही एक और क्षेत्र है जहाँ मध्य छत्तीसगढ़ के चार मध्यम और बड़े बाँध स्थित हैं। इन बाँधों के निर्माण की वजह से अनेक गाँवों का विस्थापन हो गया था। इनमें से कई गाँवों में आज तक पुनर्वास नहीं हो पाया है। इन बाँधों के जलग्रहण क्षेत्र में आने वाले गाँवों के कई लोगों के लिए मछली मारना एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि बन गई है।

ऊपर उल्लिखित, कृषि व पारिस्थितिक तंत्र से जुड़ी तीन विशेषताएँ इन क्षेत्रों के लोगों की जीविकाओं के विविध स्वरूपों को प्रभावित करती हैं। शहरीकरण भी यहाँ के लोगों की, खासतौर से जिले में नए उभरते छोटे शहरी केन्द्रों से सटे हुए इलाकों में, जीविका के स्वरूपों को प्रभावित करने वाला एक और कारक रहा है। ऊपर उल्लिखित तीन क्षेत्रों की जनसांख्यिकीय रूपरेखा का भी अपना एक स्वरूप है। महानदी घाटी के कृषि आधारित क्षेत्र में जहाँ अन्य पिछड़ा वर्ग के लोगों की संख्या सबसे अधिक है, वहीं जंगलों और बाँधों वाले अन्य दो क्षेत्रों में जनजातीय जनसंख्या अधिक है।

जीविकाओं के विविध स्वरूपों का सर्वेक्षण करने के लिए और इन जिलों के इन क्षेत्रों के लोगों की जीविकाओं को प्रभावित करने वाले कारकों को समझने के लिए एक अध्ययन किया जा रहा है। नमूने के लिए कुछ गाँवों का चयन किया गया है जिनमें नमूना स्वरूप चुने गए घरों से जानकारियों को एकत्र किया गया। इस अध्ययन में एक मिश्रित पद्धति वाला तरीका अपनाया गया है, जिनमें आँकड़ों को इकट्ठा करने के लिए परिवार के सर्वेक्षणों, गहन समूह चर्चाओं (फोकस ग्रुप डिस्कशन), लोगों से बातचीत और सहभागिता के आधार पर सुखी जीवन के वर्गीकरण जैसे कई उपकरणों का उपयोग किया गया है।

हमने बच्चों को आँकड़ों को इकट्ठा करने की प्रक्रिया में शामिल करने के बारे में विचार किया। बच्चों द्वारा आँकड़ों के एकत्रीकरण करने के लिए, निम्नलिखित तीन प्रकार के उपकरणों का उपयोग करने का निर्णय लिया गया :

क. प्रतिदिन का कार्यक्रम : वयस्कों और बच्चों द्वारा किए जाने वाले कामों में लिंग–आधारित भेद को समझना। हर एक गाँव के दस बच्चे (पाँच लड़के और पाँच लड़कियाँ) इस कार्य में शामिल हुए।

ख. गाँव का विवरण तैयार करना : गाँवों की जनसांख्यिकीय, सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक और आधारभूत संरचना (बुनियादी सुविधाओं) सम्बन्धी जानकारियों से जुड़े आँकड़ों को इकट्ठा करने के लिए एक प्रारूप तैयार किया गया। इस कार्य को करने के लिए हर गाँव से चार से छह बच्चों के एक या दो समूह बनाए गए।

ग. मौसमी कैलेण्डर : खेती से जुड़ी पद्धतियों और फसलों के चक्रों, स्वास्थ्य से जुड़ी मौसमी समस्याओं, लघु वन उपज की उपलब्धता, स्थानीय उत्सवों और मेलों तथा साल के विभिन्न महीनों में मिलने वाली सब्जियों और फलों से सम्बन्धित आँकड़ों को इकट्ठा करना। इस कार्य को भी हर गाँव से बच्चों के एक या दो समूहों ने किया।

बत्तीस गाँवों के कक्षा आठ के करीब 300 बच्चों ने इस प्रक्रिया में भाग लिया। बच्चों द्वारा दिखाए गए जोश और उत्साह से लेकर, इकट्ठा किए गए आँकड़ों की गुणवत्ता तक, हमारे अनुभव प्रेरणादायी रहे हैं। हालाँकि, शुरुआत में

हमें इतने सकारात्मक परिणाम का भरोसा नहीं था, क्योंकि हम बच्चों की भागीदारी और आँकड़ों की गुणवत्ता, दोनों के बारे में आश्वस्त नहीं थे। इसके अलावा हम लोग शोध की नैतिकताओं से जुड़ी समस्याओं से भी जूझ रहे थे। अन्त में, स्कूल के ढाँचे के भीतर बच्चों को अपने परिवेश से जुड़ने के लिए पर्याप्त गुंजाइश न मिल पाने के कारणों की हमारी समझ के आधार पर, हमने अपनी आशंकाओं के बावजूद इस काम को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया। बच्चों में स्कूल के प्रति ऐसे अलगाव की पहचान बहुत समय से कई लोगों द्वारा की जा चुकी है और स्कूल की प्रक्रियाओं में विद्यार्थियों की रुचि न जग पाने के एक प्रमुख कारण के रूप में भी इसका निदान किया गया है।

एन.सी.एफ. 2005 इन समस्याओं को स्कूली व्यवस्था की 'कठोरता' के रूप में रेखांकित करती है, जहाँ 'सीखना एक अलग–थलग गतिविधि बन गई होती है' जो इतनी गुंजाइश नहीं देती कि 'बच्चे ज्ञान को अपनी जिन्दगियों से जोड़ पाएँ'। स्कूलों की प्रक्रियाएँ 'नए ज्ञान के सृजन की मानवीय क्षमता के महत्वपूर्ण आयामों को अनदेखा कर देती हैं', और 'ऐसी विचार प्रक्रिया को प्रचारित करती हैं जो रचनात्मक सोच और अन्तर्दृष्टि को हतोत्साहित करती है'। सीखने से बच्चे के सन्दर्भ को गायब ही कर दिया गया है और 'सीखना विद्यार्थियों और उनके माता–पिता के लिए बोझ व तनाव का एक स्रोत बन गया है'।

एन.सी.एफ. 2005 ने भी अपने दस्तावेज के विभिन्न खण्डों में इन समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने की कोशिश की है। उदाहरण के लिए, सामाजिक विज्ञानों पर बना राष्ट्रीय फोकस समूह बच्चों के जीवन की स्थानीय, सामाजिक और पर्यावरण–सम्बन्धी परिस्थितियों को उनके सीखने का हिस्सा बनाने के महत्त्व पर जोर देता है। इसी प्रकार, काम और शिक्षा पर प्रस्तुत किए गए पोजीशन पेपर में 'काम–केन्द्रित शिक्षा' के सर्वव्यापी कार्यक्रम को लागू करने का सुझाव दिया गया है। यह कार्यक्रम केन्द्रीय पाठ्यक्रम से जुड़े सभी अन्य प्रकार के कामों (उदाहरण के लिए, बच्चों द्वारा की जाने वाली गतिविधियाँ, प्रयोग, सर्वेक्षण, वास्तविक कार्यक्षेत्र–आधारित अध्ययन (फील्ड स्टडी), सामाजिक कार्य, लोगों के साथ काम करना इत्यादि) के साथ उत्पादक कार्य को भी शैक्षणिक माध्यम के रूप में देखने के सिद्धान्त पर आधारित है।

हमने जो कार्य तय किए, उन्हें हमने बच्चों को उनके परिवेश से जोड़ने के मौके की तरह से देखा। इन प्रक्रियाओं में विद्यार्थी जानकारियों के विभिन्न स्रोतों की पहचान कर रहे थे, आँकड़ों को इकट्ठा कर रहे थे (कहीं–कहीं दो आँकड़े एक–दूसरे के परस्पर विरोधी भी थे), एक से ज्यादा स्रोतों से उन्हें इकट्ठा करके उनका सत्यापन कर रहे थे और फिर उन आँकड़ों का श्रेणीकरण कर रहे थे। यह माना जा सकता है कि बच्चों के मन में उनके नजदीकी परिवेश के साथ सीधे तौर पर जुड़ी विभिन्न चीजों के बारे में ज्ञान निर्मित होता रहता है। लेकिन, बच्चे जब ये कार्य कर रहे थे तो उस दौरान कई अन्य महत्वपूर्ण प्रक्रियाएँ भी हो रही थीं। यहाँ बच्चों के विचारों पर आधारित ऐसी ही कुछ चीजों की चर्चा की जा रही है।

समूह में कार्य करना, ऐसी ही एक बात थी जिसका बच्चों ने सबसे ज्यादा मजा लिया। बच्चों ने समूह के अन्दर अपने–अपने कार्यों को बाँट लिया। कुछ बच्चों ने गाँव के बुजुर्गों से बात करने का काम अपने हाथ में लिया। कुछ अन्य बच्चों को पटवारी या नर्स या पंचायत सचिव के साथ बात करने का काम सौंपा गया। बच्चों ने यह कहा कि ऐसी परियोजनाओं पर समूहों में काम करने के लाभों और चुनौतियों से उन्हें इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र की कई सीखें मिलीं। उनमें से कुछ बच्चों ने यह भी बताया कि वे अपना कार्य पूरा नहीं कर पाए थे, लेकिन फिर समूह के बाकी बच्चों ने उनकी मदद की। कुछ बार यह भी हुआ कि समूह ने अपने कुछ सदस्यों द्वारा दिखाई जा रही अरुचि पर नाखुशी जाहिर की।

अपने काम को ग्रामीणों को और गाँव के कर्मचारियों को समझाने के कार्य में भी उन्हें यह मौका मिला कि वे अपने संवाद कौशल को परख सकें। यद्यपि विद्यार्थियों ने महसूस किया कि उन्हें ग्रामीण व ग्राम कर्मचारियों की तरफ से मिश्रित प्रतिक्रियाएँ मिलीं। कुछ लोगों ने उनके प्रयासों का स्वागत किया और उनकी सराहना की। लेकिन कई लोगों ने उनसे यह भी कहा कि यह उनका काम नहीं था, उन्हें स्कूल जाकर अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदाय के इन लोगों में स्कूल की चहारदीवारी के भीतर ही सीखने की धारणा बड़ी मजबूत थी। हालाँकि यह बात दिलचस्प थी कि हमारे शुरुआती संवादों के दौरान अधिकांश शिक्षकों ने इस विचार का स्वागत किया और उनमें से कुछ ने दो विद्यार्थियों को उनके काम में मदद भी दी।

इन स्कूलों में बच्चे जो काम कर रहे थे, उसे समझाने के लिए कई शिक्षकों ने शहरी स्कूलों में बच्चों द्वारा किए जाने वाले परियोजना कार्य की उपमा दी और उन्होंने इन्हीं सन्दर्भों

में इन कार्यों का मूल्यांकन किया। परिणामस्वरूप, जिन स्कूलों में हम नहीं पहुँचे थे, उनके शिक्षकों ने हमसे सम्पर्क किया कि हम उनके स्कूलों में भी ऐसे कार्य करें। ऐसा करके उन्होंने दिखाया कि वे सीखने के दायरे में स्थानीय सन्दर्भों को शामिल करके उसका विस्तार करने के विचार से अवगत थे। लेकिन, वे कक्षा की पारम्परिक धारणा से भी बँधे हुए थे। अपने कार्यों के दौरान बच्चों के सामने जो एक और समस्या आई वह थी लैंगिक भेदभाव की। कुछ गाँवों में लड़कों और लड़कियों के मिश्रित समूह को बुजुर्गों ने टोका जो यह जानना चाहते थे कि वे लोग एक साथ कैसे और क्यों घूम रहे थे।

इस सवाल के जवाब में, कि क्या इस प्रयोग से उन्हें कुछ नया सीखने में मदद मिली या बेहतर ढंग से सीखने में मदद मिली, बच्चों ने जोरदार ढंग से हाँ में जवाब दिया। उन्होंने पाया कि पहले भी ऐसी कई चीजें थीं जिन्हें वे रोज देखते थे पर उनके बारे में अनभिज्ञ थे या पर्याप्त नहीं जानते थे। गाँव के लोग क्या करते हैं, इस सवाल के जवाब में सबसे आम जवाब था 'खेती'। लेकिन, जब उन्होंने लोगों के पेशों और उनके द्वारा किए जाने वाले कामों के बारे में सुनना शुरू किया, तो उन्हें कामों की अन्य श्रेणियों की भी जानकारी हो गई। इस तरह से, इस प्रारूप ने उन्हें चीजों को अधिक व्यवस्थित ढंग से देखने का मौका दिया, जिससे उन्हें कई नई चीजों के बारे में जानने व सीखने में मदद मिली।

प्रतिदिन के कार्यक्रम की मदद से बच्चों को लिंग के आधार पर काम के भार तथा काम के प्रकारों के बीच किए जाने वाले अन्तरों को समझा। कुछ स्कूलों में हमें विद्यार्थियों के साथ इन पहलुओं पर चर्चा करने का मौका मिला। बच्चों द्वारा इकट्ठा किए गए 'प्रतिदिन के कार्यक्रम' के आँकड़ों से बच्चों ने लगभग एकमत होकर यह निष्कर्ष निकाला कि महिलाएँ/ लड़कियाँ अपने परिवारों में लड़कों/ पुरुषों से ज्यादा काम करती हैं। इस सवाल के जवाब में भी, कि क्या काम में ऐसा लैंगिक भेदभाव होना उचित है, करीब–करीब सभी बच्चों ने यह मत जाहिर किया कि ऐसा होना अनुचित है। हमने पाया कि इन स्कूलों में विद्यार्थियों के साथ लिंग–आधारित समस्याओं की चर्चा करना एक उत्तम शैक्षणिक उपकरण हो सकता है।

बच्चों द्वारा एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण करने पर एक दिलचस्प बात सामने आती है। आँकड़ों की गुणवत्ता, सामान्यत: तो काफी अच्छी थी, लेकिन उनमें जो खामियाँ थीं उनमें से अधिकांश सरकारी विभागों से इकट्ठा किए गए आँकड़ों में थीं। उदाहरण के लिए, पटवारी से लिए जाने वाले गाँवों में जमीन के उपयोग के स्वरूप से जुड़े आँकड़े। दरअसल सरकारी व्यवस्था के अन्दर आधिकारिक गोपनीयता की भावना गाँव के स्तर पर भी काम करती प्रतीत हुई।

इस प्रकार, हमें यह स्पष्ट रूप से समझ में आया कि भागीदार बच्चों ने इस प्रक्रिया का खूब आनन्द लिया था। उन्हें समूहों में काम करने के बारे में, जानकारियों के स्रोतों के बारे में तथा उनके निकट के समाज और परिवेश के बारे में कुछ बातों को जानने और सीखने का मौका मिला। इसके अलावा, विद्यार्थियों ने इस प्रक्रिया में अपने संवाद के तथा लोगों को समझाने के कौशलों का उपयोग किया। एक बच्चे ने हमें बताया कि उसे एक शोधकर्ता की मदद करके कितना अच्छा लगा, क्योंकि उसकी नजर में वे कुछ 'गम्भीर' या 'महत्त्वपूर्ण' कार्य कर रहे थे। इस प्रक्रिया से बाकी चाहे जो भी परिणाम प्राप्त हुए हों, लेकिन बच्चों के भीतर अपने सीखने में सक्रिय भागीदार होने की भावना पैदा कर पाने के सन्तोष ने इस पूरी प्रक्रिया के लिए किए गए प्रयासों को सार्थक बना दिया।

सुरेश साहू अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन जिला संस्थान, धमतरी के साथ काम कर रहे हैं। वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में लाइवलीहुड इनीशियेटिव (जीविका पहल) का हिस्सा भी हैं। वे वर्तमान में, धमतरी जिले में, जीविकाओं के विवरण से सम्बन्धित शोधकार्य में और ग्रामीण लोगों की जीविकाओं के विकल्पों को समझने के कार्य में संलग्न हैं। इससे पहले उन्होंने विकास के क्षेत्र में, अधिकांशत: कृषि–जैव विविधता, खाद्य सुरक्षा, पारम्परिक देशी ज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों के विकेन्द्रीकृत प्रबन्धन से जुड़े मुद्दों पर काम किया है। उनसे suresh.sahu@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

राकेश टेटा अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन जिला संस्थान, धमतरी के साथ काम कर रहे हैं और वर्तमान में सामाजिक विज्ञान दल के सदस्य हैं। वे जिले के कुछ चुनिन्दा स्कूलों के साथ काम और शिक्षा के विचार पर कार्य करते रहे हैं। इससे पहले उन्होंने छत्तीसगढ़ के जनजातीय क्षेत्रों में विकास के क्षेत्र में काम किया है। उनकी रुचि के क्षेत्रों में विभिन्न सामाजिक सन्दर्भों और सांस्कृतिक परम्पराओं को समझना शामिल है। उनसे rakesh.teta@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

गुलशन यादव 2013 से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन जिला संस्थान, धमतरी के साथ फैलो के रूप में काम कर रहे हैं। उनके पास व्यवसाय प्रबन्धन में मास्टर्स की डिग्री है, जिसमें उनकी विशेषज्ञता का क्षेत्र था विपणन (मार्केटिंग) और मानव संसाधन। इसके अलावा उन्होंने प्रबन्धन में एम. फिल भी किया है। इससे पहले उन्होंने कम्प्यूटर शिक्षा के क्षेत्र में काम किया है। उनसे gulshan.yadav@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।